17 मई 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 4 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

46वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का -

उद्घाटन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ रविवार, 13 मई को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित 18 दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्रीमंत सेठ माणकचंदजी जैन सागर ने की। ध्वजारोहण श्री ऋषभकुमार नीरजकुमार जैन (कर्रापुर वाले) सागर के करकमलों से सम्पन्न हुआ। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्रीमती सुनीता प्रेमचंदजी बजाज कोटा की ओर से श्री रतनचंद जैन, श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं श्री सचिन्द्रजी शास्त्री ने किया।

शिविर का उद्घाटन चौधरी धर्मेन्द्र कुमार जैन कोलारस एवं श्री देवेन्द्र कुमार जैन कोलारस ने किया।

समारोह में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर आदि समस्त विद्वत्गण, अध्यापकगण एवं स्थानीय विद्वान मंच पर विराजमान थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्र कुमारजी सर्राफ सागर मंचासीन थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मण्डल मकरोनिया, सागर ने किया। मंगलाचरण के पश्चात् श्री ऋषभ समैया एवं पाठशाला के बच्चों ने सभी महानुभावों का स्वागत गीत के माध्यम से स्वागत किया। तत्पश्चात् ज्ञानतीर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने दिया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के उद्बोधन के साथ-साथ पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री धर्मेन्द्रजी जैन कोलारस, श्री नरेशचंदजी जैन सागर, श्रीमती सुधा जैन आदि के उद्बोधन का लाभ मिला।

अंत में सेठ गुलाबचंदजी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। शिविर हेतु प्राप्त राशि की घोषणा श्री प्रमोदजी जैन मकरोनिया ने की। दिनभर के कार्यक्रम की घोषणा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की।

इस शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमंत सेठ मानकचंद, प्रेमचन्द, अशोककुमार जैन एवं समस्त बी.एस. जैन परिवार सागर एवं आमंत्रणकर्त्ता श्री सेठ गुलाबचन्द मनीषकुमार जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर हैं।

शिविर में 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया जा रहा है, जिसके आमंत्रणकर्ता इंजी. आनन्दकुमार जैन (खुरई वाले) सागर एवं श्री सुभाषचंद सुरेशचंद वकीलचंद जैन परिवार नांगलोई दिल्ली हैं।

विधान हेतु द्रव्य के भेंटकर्त्ता श्रीमती मोहनी प्रमोदजी जैन एवं मुख्य मंगल कलश विराजमानकर्ता श्रीमती सुषमा गुलजारीलालजी जैन थे। विधान के उद्घाटनकर्त्ता सिंघई रतनचंदजी जैन मकरोनिया सागर थे।

चौदहवाँ बाल संस्कार शिविर संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली के भव्य परिसर में दिनांक 25 अप्रैल से 2 मई तक चौदहवाँ बाल संस्कार शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित विकासजी छाबड़ा, श्री अनिलभाई दहीसर, ब्र. चेतना बेन, श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा, श्रीमती स्वस्ति विराग जैन, कु. जीनल शाह, श्रीमती नेहा धमेन्द्र जैन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। आदरणीय पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर ने प्रौढ कक्षा ली।

इस शिविर में मुम्बई, औरंगाबाद, नासिक, जलगांव आदि स्थानों से लगभग 343 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। संपूर्ण शिविर में पूजन, कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त दोपहर में प्रोजेक्टर पर विशेष कक्षा का आयोजन किया गया। रात्रि में भक्ति के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीतमय कथा एवं प्रोजेक्टर पर प्रेरणादायी वीडियो सी.डी. का प्रदर्शन किया गया।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. बालुबेन प्रभुदास कामदार परिवार मुम्बई और विशेष सहयोगी श्रीमती मीताबेन शैलेष भाई दोशी परिवार मुम्बई और श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई थे।

- वीनूभाई शाह, उल्लासभाई जोबालिया

जी-जागरण के दर्शक ध्यान दें

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के जी-जागरण पर आने वाले प्रवचनों का समय बढकर अब प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 तक आधा घंटा हो गया है।

दिनांक 20 मई से 10 जुलाई तक डॉ. भारिल्ल के मोक्षमार्गप्रकाशक के सार पर किये गये 25 प्रवचनों का प्रसारण किया जावेगा। इसके पश्चात् 10 जुलाई से डॉ. भारिल्ल के समयसार पर प्रारंभ से प्रवचन प्रसारित किये जायेंगे। सभी सुधी दर्शकों से निवेदन है कि वे इसका लाभ उठावें एवं सभी विद्यालयों के संचालकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ प्रतिदिन इसका लाइव प्रसारण छात्रों को दिखाने की व्यवस्था करावे ताकि उन्हें डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का सीधा लाभ मिल सके।

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

77 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १३२

अब प्रस्तुत गाथा में पुण्य–पाप के स्वरूप का कथन कर रहे हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

सुहपरिणामों पुण्णं असुहो पावं ति हवदि जीवस्स।
दोण्हं पोग्गलमेत्तो भावो कम्मत्तणं पतो।।१३२।।

(हरिगीत)

शुभभाव जिय के पुण्य हैं अर अशुभ परिणति पाप हैं।
उनके निमित्त से पौद्गलिक परमाणु कर्मपना धरें।।१३२।।

जीव के शुभ परिणाम पुण्य हैं और अशुभ परिणाम पाप हैं; उन दोनों के द्वारा पुद्गल कर्मपने को प्राप्त होते हैं। अर्थात् जीव के पुण्य–पाप के निमित्त से पुद्गल साता–असाता वेदनीयादि रूप होते हैं, वे पुद्गल परिणाम व्यवहार से जीव के कर्म कहे जाते हैं।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि यह पुण्य–पाप के स्वरूप का कथन है। यहाँ कहते हैं कि – जीव कर्ता है और उसके शुभ परिणाम अशुद्ध निश्चयनय से भावकर्म है। तथा पुद्गल कर्म वर्गणायें कर्त्ता हैं और साता वेदनीय आदि विशिष्ट प्रकृतियाँ रूप परिणाम द्रव्यकर्म हैं।

तात्पर्य यह है कि निश्चय से जीव के अमूर्त शुभ–अशुभ परिणामरूप भाव पुण्य–पाप जीव के कर्म हैं। उन शुभाशुभ परिणामों में द्रव्य पुण्य–पाप अर्थात् पुद्गल कर्म निमित्त कारण होने से मूर्त पुद्गल रूप द्रव्य–पुण्य–पाप कर्म व्यवहार से जीव के कर्म कहे जाते हैं।

कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

जीवभाव शुभ पुण्य है, अशुभ भाव है पाप।
दौनों तैं पुग्गल करम, होइ विविध परिताप।।९५।।

(सवैया इकतीसा)

जीव परिनाम शुभ भाव पुण्य नाम कह्या,
अशुभ परिनाम कौं भाव पाप कहिए।
भाव पुण्य कारन तैं पुद्गल परमाणु,
कारमान रूप पुंज द्रव्य पुण्य कहिए।।
भाव पाप का निमित्त कारमान वर्गना है,
पुंजरूप द्रव्य पाप काजरूप गहिए।
ऐसैं पुण्य–पाप सैती सुद्ध उपयोग न्यारा,
आप रूप जान सैती कर्म पुंज दहिए।।९६।।

(दोहा)

दरवित भावित प्रगट है, पुण्य–पाप पद दोइ।
पुण्य उदै सुख होत है, पाप उदै दुःख होइ।।१०२।।

कवि के पद्यों का भाव यह है कि – जीव के शुभभाव पुण्य तथा अशुभभाव पाप है। दोनों से पुद्गल कर्मों का बंध होता है। द्रव्य कर्मों के निमित्त से राग–द्वेषरूप भावकर्म होते हैं। ऐसे पुण्य–पाप से आत्मा का शुद्ध उपयोग भिन्न हैं। उसे जानकर कर्मों को नष्ट किया जा सकता है।

दोहे १०२ में कहा है कि द्रव्य कर्म व भाव कर्म – दोनों पुण्य–पाप रूप हैं, पुण्य के उदय से सुख होता है और पाप के उदय से दुःख होता है।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''जीव के सत् क्रियारूप, दया, दानादि परिणामों को शुभ अथवा पुण्य कहते हैं तथा विषय–कषाय आदि परिणामों को पाप कहते हैं। जितने प्रमाण में जीव पुण्य–पाप के भाव करता है, उतने प्रमाण में ज्ञानावरणादि कर्म बांधता है; परन्तु जितने प्रमाण में कर्म का उदय आये, उतने ही प्रमाण में विकार करना ही पड़े – ऐसा नियम नहीं है।

भावों के कारण द्रव्य कर्मों को आना ही पड़े – ऐसी पराधीनता–पुद्गल को नहीं है, किन्तु उस समय कर्म वर्गणा के परमाणुओं की वैसी ही योग्यता है। कोई भी व्यक्ति किसी पर द्रव्य का कर्त्ता नहीं है। जीव तो स्वभाव दृष्टि से उनको जानने वाला है।

जीव को जब शुभभाव का निमित्त मिलता है, तब पुण्य प्रकृति के परमाणु बंध जाते हैं। दोनों का एक ही समय है, आगे–पीछे नहीं। भावपुण्य को पहले कहा तथा द्रव्य पुण्य की बात बाद में कही, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे दोनों आगे–पीछे होते हैं। दोनों का एक काल है।

आत्मा में जो पुण्य–पाप का विकार होता है, वह हेय है, बंध का कारण है। आत्मा शुद्ध ज्ञानानन्द स्वरूप है, उस शुद्ध स्वभाव चूकने से विकारभावों की उत्पत्ति होती है।

कर्म तो कर्म के कारण बंधते हैं, वे पुद्गल की पर्यायें हैं। जीव जितने प्रमाण में विकार करता है, उसी प्रमाण में नवीन कर्म बंधते हैं।''

इसप्रकार संक्षेप में पुण्य–पाप का स्वरूप एवं विषय बताया तथा धर्म इन पुण्य–पाप अर्थात् शुभाशुभ भावों से भिन्न है। पुण्य के फल में स्वर्ग तथा मनुष्य भव में अनुकूल सुख–सामग्री प्राप्त होती है तथा पाप के फल में नरक तिर्यंचगति के दुःख प्राप्त होते हैं।

धर्मी ज्ञानी जीव पुण्य–पाप से पार वीतराग धर्म की साधना/आराधना करके अनन्त सुख स्वरूप मुनि प्राप्त करते हैं। ●

गाथा – १३३

अब प्रस्तुत गाथा में मूर्तकर्म का समर्थन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जम्हा कम्मस्स फलं विसयं फासेहिं भुंजदे णियदं।
जीवेण सुहं दुक्खं तम्हा कम्माणि मुत्ताणि।।१३३।।

(हरिगीत)

जो कर्म के फल विषय हैं, वे इन्द्रियों से भोग्य हैं।
इन्द्रिय विषय हैं मूर्त इससे करम फल भी मूर्त हैं।।१३३।।

कर्म के फल में प्राप्त इन्द्रिय विषय मूर्त हैं; क्योंकि वे जीव के द्वारा इन्द्रियों के माध्यम से सुख–दुःख रूप से भोगे जाते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि यह मूर्तद्रव्य का समर्थन है कर्मफल जो सुख–दुःख के हेतु भूतमूर्त विषय हैं, वे नियम से मूर्त इन्द्रियों द्वारा जीव से भोगे जाते हैं, इसलिए कर्म के मूर्तपने का अनुमान होता है।

जिसप्रकार मूषक विष मूर्त है, उसी प्रकार कर्ममूर्त हैं, क्योंकि मूर्त के सम्बन्ध द्वारा अनुभव में आने वाला ऐसा मूर्त उसका फल है।

टीका में विशेष खुलासा इसप्रकार है कि चूहे के विष का फल सूजन आदि के रूप में मूर्त है और मूर्त शरीर के द्वारा अनुभव में आता है; इसलिए अनुमान होता है कि चूहे का विष मूर्त है, उसीप्रकार कर्म का फल मूर्त है और मूर्त इन्द्रियों के सम्बन्ध द्वारा अनुभव में आता है, इसलिए अनुमान होता है कि कर्म मूर्त है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

करमपुंज के फल विषै, सुख–दुःखरूपी मर्म।
इन्द्रिय करि जिय भोगवै तातैं मूरत कर्म।।१०४।।

(सवैया इकतीसा)

कर्म कै विपाक माहिं जो जो फल उदै रूप,
सो सो पाँच इन्द्रियों के, विषै ही बताये हैं।
सोई पाँच इन्द्री करि जीव भोग–योग सबै,
सुखी–दुःखी रूप नाना भेद सौं जताये हैं।
इन्द्री मूरतीक तातैं जीव इन्द्रीधारी मूर्त,
विषै मूरतीक दिखै कारज सुहाया है।।
कारन सरूप तातैं करम सौं मूरतीक,
कारन सा कारज है, ज्ञानी सोध पाया है।।१०५।।

(दोहा)

मूरत जाकै फल लसैं, मिलैं करम जो होइ।
सो मूरत कहो क्यों नहीं, पुग्गल रूपी सोइ।।१०६।।

कवि हीरानन्द कहते हैं कि कर्मों के फल में जो सुख–दुःख रूप फल प्राप्त होते हैं। उन सुख–दुःख के निमित्त से पुद्गल कर्म बंधते हैं, उन पुद्गल कर्मों के निमित्त से इष्टानिष्ट बाह्य वस्तुओं का संयोग होता है तथा उनके निमित्त से पुनः सुख–दुःख होते हैं एवं इष्ट–अनिष्ट वस्तुओं का संयोग होता है। इस तरह भाव पुण्य–पाप तथा द्रव्य पुण्य–पाप का सहज सम्बन्ध बनता रहता है।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए कहते हैं कि 'पूर्व के प्रारब्ध कर्म के फल में बाहर में इष्ट–अनिष्ट विषयों के संयोग होते हैं।

भाई ! उन्होंने पूर्व में जैसे शुभाशुभ परिणाम किए, वैसा कर्मबंध किया है, उसका उदय होने पर बाह्य इष्ट–अनिष्ट सामग्री मिलती है। उसमें इष्ट–अनिष्ट कल्पना तो जीव ने अपने अज्ञान से अपने उदय के अनुसार की; परन्तु जो सामग्री मिली, वह तो पूर्व कर्म के निमित्त से मिली है।

वर्तमान में जो मूर्त सामग्री मिली, उसके कारण रूप कर्म भी मूर्त हैं। यहाँ कर्मों को मूर्तिक सिद्ध करना है। पूर्व का पुण्य तो पुण्य के फल में बाह्य मूर्त सामग्री का संयोग मिलता है; परन्तु चैतन्य की शान्ति उसमें से नहीं मिलती। जड़कर्मों का फल तो जड़ में ही आता है। तथा चैतन्य की शान्ति का फल चैतन्य के स्वरूप में से आता है।''

मूर्त इन्द्रियाँ आत्मा के विषयों को भोगती हैं। यह उपचार से किया कथन है। वस्तुतः आत्मा पर को नहीं भोगता। यहाँ तो इतना बताने का प्रयोजन है कि कर्म मूर्त हैं और उनका फल भी मूर्त में ही आता है।

इसप्रकार यहाँ कहा है कि – वस्तुतः अमूर्तिक, शुद्ध, चिदानन्द आत्मा ही उपादेय हैं, इसकी श्रद्धा–ज्ञान और इसी में एकाग्रता करना ही शान्ति का उपाय है। ●

गाथा – १३४

विगत गाथा में कहा है कि कर्म का फल मूर्त इन्द्रियों द्वारा भोगा जाता है, इससे सिद्ध है कि कर्म मूर्तिक हैं।

प्रस्तुत गाथा में कह रहे हैं कि मूर्त कर्म का मूर्त कर्म के साथ बंध होता है तथा अमूर्त जीव का मूर्तकर्म को अवगाह देता है तथा मूर्त पुद्गल का अमूर्त जीव के साथ अवगाह होता है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

मुत्तो फासदि मुत्तं मुत्तो मुत्तेण बंधमणुहवदि।
जीवो मुत्तिविरहिदो गाहदि ते तेहिं उग्गहदि।।१३४।।

(हरिगीत)

मूर्त का स्पर्श मूरत, मूर्त बँधते मूर्त से।
आत्मा अमूरत करम मूरत, अन्योन्य अवगाहन लहें।।१३४।।

मूर्त मूर्त को स्पर्श करता है, मूर्त मूर्त के साथ बन्ध को प्राप्त होता है; किन्तु मूर्तत्व रहित जीव मूर्त कर्मों को अवगाह देता है और मूर्तकर्म मूर्तरहित जीव को अवगाह देता है। तात्पर्य यह है कि जीव कर्मों को तथा कर्म जीवों को परस्पर अवगाह देते हैं।

इस विषय में श्री आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि यहाँ इस लोक में संसारी जीवों में अनादि संतति से प्रवर्तता हुआ मूर्तकर्म विद्यमान है। वह स्पर्शादि वाला होने के कारण आगामी मूर्तकर्मों से स्पर्श करता है, इसकारण मूर्त का मूर्त के साथ स्निग्ध गुण के वश बंध होता है।

अब अमूर्त जीव का मूर्त कर्म के साथ जो बंध होता वह बताते हैं। निश्चयनय से अमूर्त जीव अनादि मूर्तकर्म जिसका निमित्त है, ऐसे रागादि परिणाम द्वारा स्निग्ध वर्तता हुआ मूर्तकर्मों को विशिष्ट रूप से अवगाहता है और उस रागादि परिणाम के निमित्त से ज्ञानावरणादि कर्म परिणाम को प्राप्त होते हैं, ऐसे मूर्तकर्म भी जीव को विशिष्ट रूप से अवगाहते हैं।

यह अमूर्त जीव और मूर्त कर्म का अन्योन्य अवगाह स्वरूप बंध

(शेष पृष्ठ 5 पर)

श्री महावीराष्टक स्तोत्र

(हिन्दी पद्यानुवाद)

जिनके परम कैवल्य में चेतन–अचेतन द्रव्य सब,
उत्पाद–व्यय अरु ध्रौव्य युत नित झलकते हैं मुकुर सम।
जो जगत दृष्टा दिवाकर सम मुक्ति मार्ग प्रकट करें,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।1।।
जिनके कमल सम हैं नयन दो, लालिमा से रहित हैं,
करते प्रकट अन्तर–बहिर्, क्रोधादि से नहीं सहित हैं।
है मूर्ति जिनकी शान्तिमय, अति विमल जो मुद्रा धरें,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।2।।
नमित इन्द्रों के मुकुट, मणियों के प्रभा समूह से,
शोभायमान चरणयुगल, लगते हैं जिनके कमल से।
संसार ज्वाला शान्त करने हेतु जल सम जो बहें,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।3।।
मुदित मन से चला जिनकी, अर्चना के भाव से,
तत्क्षण हुआ सम्पन्न मेंढक स्वर्ग सुख भण्डार से।
आश्चर्य क्यों ? यदि भक्तजन नित मोक्षलक्ष्मी वरण करें,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।4।।
तप्त कंचन प्रभा सम, तन रहित ज्ञान शरीर युत,
हैं विविधरूपी एक भी हैं अजन्मे सिद्धार्थ सुत।
हैं बाह्य–अंतर लक्ष्मी युत तदपि विरागी जो बने,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।5।।
जिनकी वचनगंगा विविध नय युत लहर से निर्मला,
ज्ञानजल से नित्य नहलाती जनों को सर्वदा।
जो हंस सम विद्वत् जनों से निरन्तर परिचय करें,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।6।।
जिसने हराया काम योद्धा तीनलोकजयी महा,
अल्पायु में भी आत्मबल से वेग को निर्बल किया।
जो निराकुलता–शान्तिमय आनन्द राज्य प्रकट करें,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।7।।
जो वैद्य हैं नित मोहरोगी जनों के उपचार को,
मंगलमयी नि:स्वार्थ बन्धु विदित महिमा लोक को,
उत्तमगुणी जो शरण आगत साधुओं के भय हरें,
वे महावीर प्रभु हमारे नयनपथगामी बनें।।8।।

भागेन्दुकृत जो महावीराष्टक स्तोत्र पढें–सुनें,
भक्तिमय वे भक्तिपूर्वक परमगति निश्चय लहें।।

– निशान्त जैन 'निश्चल' मेरठ

विधान एवं गोष्ठी संपन्न

दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित दि. जिनमंदिर में सरस्वती विधान एवं विचार गोष्ठी 'शास्त्री : एक उपलब्धि' सानंद संपन्न हुई। यह कार्यक्रम श्री विवेक जैन दिल्ली पुत्र श्री सुनील कुमार जैन द्वारा टोडरमल महाविद्यालय में शास्त्री का अध्ययन पूर्ण करने के उपलक्ष्य में रखा गया।

प्रात: विधानोपरान्त गोष्ठी प्रारम्भ हुई, जिसमें स्थानीय विद्वान पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे जीवन का आमूलचूल परिवर्तन इस अध्यात्म विद्या से ही हुआ है। पण्डित संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा ने अपने वक्तव्य में इस अपूर्व विद्या को ग्रहण करना अपने जीवन की विशेष उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा तत्त्वज्ञान का उद्घाटन इस पंचम काल में अमृत समान है।

गोष्ठी के अन्त में जयपुर से पधारे विशेष वक्ता पण्डित सोनूजी शास्त्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि अध्यात्म विद्या को ग्रहण करने का मुख्य केन्द्र श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय ही है। उन्होंने कहा इस महाविद्यालय में पढकर विद्यार्थी आत्मकल्याण का मार्ग व न्यायोचित जीवन जीने की कला यहीं से सीखता है। साथ ही उन्होंने सभा में उपस्थित सभी साधर्मियों को भविष्य में अपने बालकों को इस महाविद्यालय में अध्यात्मविद्या ग्रहण करने की प्रेरणा दी। आगे उन्होंने अपने वक्तव्य में अपने गुरु आदरणीय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का स्मरण करते हुए नवयुवकों में तत्त्वज्ञान को व्यवस्थित रूप से प्रचारित–प्रसारित करने हेतु उपकार बताया।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 250 साधर्मियों ने लाभ लिया।

जिनपूजन शिक्षण शिविर

अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद दिल्ली के तत्त्वावधान में श्री दि. जैन मंदिर पार्श्वविहार दिल्ली–92 में ऐतिहासिक जिनदर्शन–पूजन शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन डॉ. अशोक जैन गोइल्ल शास्त्री के निर्देशन में 5 मई से 7 मई 2012 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें सैंकड़ों व्यक्तियों ने लाभ उठाया। दिल्ली के अनेक विद्वानों का लाभ भी इस अवसर पर प्राप्त हुआ।

शिविर में प्रबंधकारिणी कमेटी के सचिव श्री अनिल जैन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। **– अखिल बंसल**

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में लगने वाला आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 22 जुलाई से 31 जुलाई, 2012 तक आयोजन होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

(पृष्ठ 3 का शेष...)

का प्रकार है। इसप्रकार अमूर्त जीव का भी मूर्त कर्म के साथ बंध विरोध को प्राप्त नहीं होता।

कवि हीरानन्दजी इसी विषय को काव्य में कहते हैं–

(दोहा)

मूरत मूरत परस है, मूरत सौं सम्बन्ध।
जीव अमूरत करम कौं गहै गहावै अंध।।१०७।।

(सवैया इकतीसा)

याही जगमाहिं जीव संग लग्या चल्या आया,
मूरत कर्म–पुंज संतति सुभाव तैं।
फास आदि भेद तातैं साहजिक लसैं बावे,
कर्म सेती एकमेक होहि बंध दावतैं।।
निहचै अमूरतीक जीव राग आदि भाव,
कर्म पुंज बन्ध करै चैतना विभाव तैं।
ऐसा बंध भेद जानि आपापर भिन्न मानि,
भेदज्ञानी मोख पावै बंध के अभाव तैं।।१०८।।

(दोहा)

एक मेक अवगाहना, एकमेक परदेस।
दोइ दरब इकठे रहैं, सोई बंध विशेष।।१०९।।

उपर्युक्त हिन्दी पद्यों का सामान्य अर्थ यह है कि ''पूर्व में बंधे हुए मूर्तिक कर्मों से आगामी मूर्तकर्मों का बंध होता है, यद्यपि ऐसा कहा जाता है कि अमूर्त आत्मा मूर्त कर्मों से बंधा है; परन्तु वास्तविकता यह है कि अमूर्त से मूर्त का बंध नहीं होता। अमूर्त आत्मा के विभाव तो मात्र निमित्त बनते हैं, उन रागादि के निमित्त बंध तो मूर्त कर्मों से मूर्त कर्मों का ही होता है।''

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी भी यही कहते हैं कि आत्मा तो ज्ञानघन अरूपी वस्तु है। उसकी पर्याय में जो दया आदि के शुभभाव होते हैं एवं अहिंसा आदि के अशुभभाव होते हैं, वे भी अरूपी हैं, परन्तु वे शुभाशुभ परिणाम वस्तुत जीव के ही हैं; क्योंकि वे भी अमूर्त हैं, चैतन्य में स्पर्श गुण नहीं हैं, वह तो अस्पर्शी है, जीव तो अपने में अमूर्तिक विकार करता है तथा उस विकार के निमित्त से मूर्त कर्मों के साथ मूर्त कर्म बंधते हैं। मूर्तकर्म के संयोग से जीव मूर्त नहीं हो जाता।

यहाँ यह नहीं समझना कि जीव की पर्याय में विकार होता ही नहीं है। विकार तो जीव की पर्याय में होता है, वह विकार भी अमूर्तिक है। चिदानन्द स्वरूप से चूकने पर विकारी पर्याय होती है तथा चैतन्यस्वरूप श्रद्धा ज्ञान करके एकाग्र होने पर विकार छूटकर निर्विकारी पर्याय प्रगट होती है।''

तात्पर्य यह है कि जीव के स्वभाव में विकार नहीं है, पर्याय में जो विकार है, उसे कर्म नहीं कराता; किन्तु जीव जब अपने अपराध से पर्याय में विकार करता है तो उस विकार के निमित्त से नये कर्म बंधते हैं। ऐसा समझकर ध्रुवस्वभाव की श्रद्धा करना धर्म है। ●

बाल संस्कार शिविर संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल में अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल जबलपुर के मार्गदर्शन में दिनांक 1 से 8 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित अभिनयजी शास्त्री, पण्डित निपुणजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री बड़ौत, पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनोजी शास्त्री तथा स्थानीय विद्वानों में पण्डित मनोजजी, पण्डित जिनेन्द्रजी, पण्डित श्रेणिकजी, श्रीमती अल्का, श्रीमती पूजा, श्रीमती कांति, श्रीमती श्रद्धा, श्रीमती आरती द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ द्वारा क्रमबद्धपर्याय एवं पण्डित गौरवजी शास्त्री द्वारा समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता रूपाली परिवार जबलपुर थे। शिविर में लगभग 550 बच्चों ने धार्मिक संस्कारों को ग्रहण किया।

शिविर में श्री संजयकुमारजी जैन, श्री अनुभवजी जैन, महिला मण्डल एवं चेतना मण्डल का भरपूर सहयोग रहा।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में पण्डित टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद खड़ैरी के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 12 मई तक बाल संस्कार शिविर एवं नव लब्धि विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित आदीशजी मड़ावरा, पण्डित सौरभजी शास्त्री अमरमऊ आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 11 मई को पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील का सम्मान समारोह रखा गया, जिसमें उन्हें 'गुरुणांगुरु' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

दिनांक 12 मई को पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का सम्मान समारोह रखा गया, जिसमें उन्हें 'बुन्देलखण्ड गौरव' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर लगभग 300 बच्चों सहित 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर में आयोजित नवलब्धि विधान के आयोजनकर्ता श्री नरोत्तमदासजी चैतन्य शास्त्री अभयशास्त्री परिवार खड़ैरी द्वारा किया गया।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत द्वारा संपन्न कराये गये।

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

94 – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पहला प्रवचन

(गतांक से आगे...)

पण्डित टोडरमलजी पत्र में आगे लिखते हैं कि **तुम्हारा पत्र भाईश्री रामसिंहजी भुवानीदासजी पर आया, उसके समाचार जहानाबाद से मुझको अन्य साधर्मियों ने लिखे थे।**

उक्त कथन से यह सिद्ध होता है कि यह पत्र पण्डितजी को नहीं लिखा गया था। यह तो जहानाबाद के लोगों को लिखा गया था। जब उन्हें इन प्रश्नों का उत्तर नहीं आया तो उन्होंने उस पत्र को टोडरमलजी के पास जयपुर भेज दिया।

तात्पर्य यह है कि न तो टोडरमलजी मुल्तानवालों को जानते थे और न मुल्तानवाले ही टोडरमलजी को जानते थे; पर जहानाबाद के लोग टोडरमलजी की विद्वत्ता से भलीभाँति परिचित थे।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि जिनसे पण्डितजी परिचित नहीं थे और जिनके द्वारा भेजे गये सभी प्रश्न भी इसप्रकार के नहीं थे कि जिसमें उनका ज्ञानीपन झलकता हो; फिर भी वे उन्हें अज्ञानीजनों जैसा संबोधित नहीं करते, उनके लिए सहजानन्द की वृद्धि की कामना करते हैं, जिसमें अप्रत्यक्षरूप से ज्ञानीपन झलकता है।

आज की स्थिति तो यह है कि बड़े से बड़े विद्वान के लिये भी हम ऐसे शब्दों के प्रयोग से बचने का प्रयास करते हैं कि जिससे प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से उन्हें ज्ञानी न समझ लिया जाय। कुछ लोग तो प्रवचन और वाचन में भी भेद करते हैं। उनकी दृष्टि में प्रवचन तो मात्र ज्ञानियों के ही होते हैं और अज्ञानीजनों का शास्त्रव्याख्यान करना उनकी दृष्टि में वाचन है। उनके द्वारा इस भेदव्यवहार का आधार क्या है? समझ में नहीं आता।

इसप्रकार की प्रवृत्ति गुजरातियों में अधिक पाई जाती है। जबकि गुजरात में तो नेताओं के राजनैतिक भाषणों को भी प्रवचन कहा जाता है। जो भी हो... । आप अपने मन में किसी को कुछ भी क्यों न समझें, पर साधर्मियों को परस्पर ऐसे वचन व्यवहार से अवश्य बचना चाहिए, जिनमें इसप्रकार का भेदभाव अभिव्यक्त होता हो।

भाग्य की बात है कि आज हमारे पास पण्डित टोडरमलजी की रहस्यपूर्णचिट्ठी तो है; पर वह पत्र उपलब्ध नहीं है, जिसके उत्तर में यह चिट्ठी लिखी गई थी।

यद्यपि हम यह नहीं जान सकते कि उसमें किसप्रकार के संबोधन थे; तथापि पण्डितजी के उत्तरों के आधार पर उन प्रश्नों का अनुमान तो कर ही सकते हैं, जिनके उत्तर इस रहस्यपूर्णचिट्ठी में हैं।

हमारा कहना तो यह है कि पूर्णत: अपरिचित व्यक्तियों का; उनके पत्र के आधार पर, उनकी रुचि, योग्यता, जिज्ञासा और उनके ज्ञान का स्तर जानकर जिसप्रकार का पत्र लिखा गया है; उसके आधार पर हम वचनव्यवहार संबंधी मार्गदर्शन तो प्राप्त कर ही सकते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजी स्वामी जीवन भर आत्मा के गीत गाते रहे, ४५ वर्ष तक लगातार एक आत्मा का स्वरूप ही समझाते रहे। हमने अनेक बार देखा है कि कुछ भी क्यों न हो, पर उन्होंने अपने प्रवचन के विषय को नहीं बदला।

चैन्नई में पंचकल्याणक के अवसर पर गुरुदेवश्री का प्रवचन चल रहा था। सामने तमिलनाडु की जनता बैठी थी। उनमें से अधिकांश भाई–बहिन हिन्दी–गुजराती से भी अपरिचित थे, जैनधर्म के सामान्यज्ञान से भी वंचित थे; पर गुरुदेवश्री बिना किसी विकल्प के दृष्टि के विषयभूत त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा का स्वरूप ही समझा रहे थे।

एक बार तो हमें ऐसा लगा कि ये क्या कर रहे हैं ? इस सभा में तो सामान्य सदाचार की चर्चा करना चाहिए, सद्व्यवहार की प्रेरणा दी जानी चाहिए, णमोकार महामंत्र सुनाना चाहिए, उसका भाव समझाना चाहिए।

क्या गुरुदेवश्री को..... । पर क्या करें, वे तो इसप्रकार की औपचारिकता से दूर ही रहें। चौबीस वर्ष की उम्र में स्थानकवासी सम्प्रदाय में दीक्षा ले ली और जगत से अलिप्त ही रह गये। उन्हें क्या पता कि लौकिक व्यवहार क्या होता है ? आज की दुनिया कितनी बदल गई है, कहाँ से कहाँ पहुँच गई है।

पर धीरे–धीरे हमारी समझ में आया कि समझदारी का काम तो इस दुनियादारी से अलिप्त रहना ही है।

उनका कहना तो यह था कि हमारे पास तो यह असली माल है। जिसको लेना हो, ले ले; समझना हो समझ लें। समझ में आये तो यह है, समझ में न आये तो यह है।

अरे, भाई ! समझ में क्यों नहीं आयेगा ? प्रत्येक आत्मा स्वयं समझ का पिण्ड है न, भगवान है न ! जब शेर की समझ में आ गया था तो मनुष्यों की समझ में क्यों नहीं आयेगा ?

यदि वे चारणऋद्धिधारी मुनिराज भी यही सोचते कि इस क्रूर शेर की समझ में कैसे आयेगा, तो फिर क्या होता, उस सिंह को देशना कैसे प्राप्त होती, बिना देशनालब्धि के उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति भी कैसेहोती?

सन् १९७२–७३ में जब मैं **'तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ'** पुस्तक लिख रहा था; तब इस प्रकरण को लिखते समय मुझे बहुत विकल्प खड़े हुए कि मुनिराजों ने आखिर शेर को क्या समझाया होगा ?

इसके लिए मैंने उक्त प्रसंग को अनेक शास्त्रों में देखा तो लगभग सभी जगह यही लिखा था कि हे मृगराज ! तेरी यह क्या दशा हो रही है, तू तो भविष्य का तीर्थंकर है, तू महावीर के रूप में चौबीसवाँ तीर्थंकर होनेवाला है। इसीप्रकार की अनेक बातें लिखी पाईं।

मैंने भी उसी के अनुसार एक–दो पेज लिख दिये।

पुस्तक छपने में चली गई थी। जल्दी होने से रात में ही उक्त पेज छप रहे थे; पर मुझे रात के २ बजे यह विचार आया कि **त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा का स्वरूप समझे बिना सम्यग्दर्शन कैसे हो सकता है ? अत: यह निश्चित ही है कि मुनिराजों ने उसे दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा का स्वरूप अवश्य समझाया होगा। यदि यह सत्य है तो अपने को भी इस प्रसंग पर उक्त विषय का विवेचन अवश्य करना चाहिए।**

यह सोच ही रहा था कि यह प्रश्न उपस्थित हो गया कि **यह पर और पर्याय से भिन्न त्रिकाली भगवान आत्मा की बात शेर को समझ में कैसे आई होगी ?**

अन्तत: इस निर्णय पर पहुँचा कि आई तो थी ही, यदि नहीं आई होती तो सम्यग्दर्शन कैसे होता ?

दूसरी बात यह भी तो है कि शास्त्रों में जो कुछ लिखा है और अपन ने भी अभी तक जो कुछ लिखा है; वह भी तो लगभग ऐसा ही है।

तुम भविष्य में तीर्थंकर होनेवाले हो – यह बात भी तो शेर के लिए आसान नहीं है; क्योंकि वह क्या जाने कि तीर्थंकर क्या होता है।

इसीप्रकार तुम सातवें नरक से आये हो – यह समझना भी तो उसे आसान नहीं है; क्योंकि वह क्या जाने स्वर्ग–नरक। स्वर्ग कितने होते हैं और नरक कितने होते हैं, वह तो यह भी नहीं जानता।

अत: इस विकल्प से कि समझ में नहीं आयेगी आत्मा की बात लिखना ही नहीं, समझदारी की बात नहीं है। **यदि देशनालब्धि का प्रकरण है तो आत्मा–परमात्मा की बात आनी ही चाहिए।**

यह विचार कर मैंने रात के दो बजे चलती मशीन रुकवाकर निम्नांकित अंश उसमें जोड़ दिया –

''देह में विराजमान, पर देह से भिन्न एक चेतन तत्त्व है। यद्यपि उस चेतन तत्त्व में मोह–राग–द्वेष की विकारी तरंगे उठती रहती हैं; तथापि वह ज्ञानानन्दस्वभावी ध्रुवतत्त्व उनसे भिन्न परमपदार्थ है, जिसके आश्रय से धर्म प्रगट होता है। उस प्रगट होनेवाले धर्म को सम्यग्दर्शन–ज्ञान और चारित्र कहते हैं।

सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र दशा अन्तर में प्रगट हो, इसके लिए परम–पदार्थ ज्ञानानन्दस्वभावी ध्रुव आत्मतत्त्व की अनुभूति अत्यन्त आवश्यक है। उस अनुभूति को ही आत्मानुभूति कहते हैं। वह आत्मानुभूति जिसे प्रगट हो गई, 'पर' से भिन्न चैतन्य आत्मा का ज्ञान जिसे हो गया; वह शीघ्र ही भव–भ्रमण से छूट जायेगा।

'पर' से भिन्न चैतन्य आत्मा का ज्ञान ही भेदज्ञान है। यह भेदज्ञान और आत्मानुभूति सिंह जैसी पर्याय में भी उत्पन्न हो सकती हैं औरउत्पन्न होती भी हैं। अत: हे मृगराज ! तुझे इन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न चाहिए।

हे मृगराज ! तू पर्याय की पामरता का विचार मत कर, स्वभाव के सामर्थ्य की ओर देख। तू भी सिद्ध के समान अनन्तज्ञानादि गुणों का पिण्ड है। ध्रुवस्वभाव के अवलम्बन से ही पर्याय में सामर्थ्य प्रगट होती है। इतना ज्ञान तेरी वर्तमान पर्याय में भी प्रगट है कि जिससे तू चैतन्यतत्त्व का अनुभव कर सके।

जिसप्रकार सिंह–शावक अपनी माँ सिंहनी को हजारों के बीच पहिचान लेता है। भले ही वह अपनी माँ को किसी नाम या गाँव से न जानता हो, पर उसे जानता अवश्य है; उसीप्रकार तू भले ही तत्त्वों के नाम न जान पावे, तो भी 'पर' से भिन्न आत्मा को पहिचान सकता है।

इस समय तेरे परिणामों में भी विशुद्धि है। तू अन्तरोन्मुखी होकर आत्मा के अनुभव का अपूर्व पुरुषार्थ कर, तुझे अवश्य ही आत्मानुभूति प्राप्त होगी। तेरी काललब्धि आ चुकी है, तेरी भली होनहार हमें स्पष्ट दिखाई दे रही है, तुझमें सर्वप्रकार पात्रता प्रगट हुई प्रतीत हो रही है।

तू एक बार रंग–राग और भेद से भिन्न आत्मा का अनुभव करने का अपूर्व पुरुषार्थ कर...कर...कर...![१]''

पण्डित टोडरमलजी ने भी यह विचार नहीं किया कि किसी की समझ में आयेगा या नहीं ? उन्होंने तो मुलतानवाले भाइयों के प्रति यही भावना भायी कि तुम्हारे चिदानन्दघन के अनुभव से सहजानन्द की वृद्धि चाहिए।

इसप्रकार हम देखते हैं कि इस रहस्यपूर्णचिट्ठी का एक–एक वाक्य ऐसा है; जो मोक्षमार्ग की सम्पूर्ण प्रक्रिया पर प्रकाश डालने में समर्थ है।

यही कारण है कि यह चिट्ठी शास्त्र बन गई है। इसलिए हमें इस चिट्ठी को पत्र के रूप में नहीं, शास्त्र के रूप में पढ़ना चाहिए, इसका गहराई से अध्ययन करना चाहिए, इसका स्वाध्याय करना चाहिए। ●

१. तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ, पृष्ठ ३२–३३

17 मई 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

शोक समाचार

1. करैरा-शिवपुरी (म.प्र.) निवासी श्री उदयचंदजी जैन का दिनांक 24 अप्रैल 2012 को ग्वालियर (म.प्र.) में 71 वर्ष की आयु में आत्मचिन्तन करते हुए समताभावपूर्वक देहावसान हो गया। आप सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के दृढ श्रद्धानी थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के प्रथम सत्र के स्नातक ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री के अग्रज भ्राता थे तथा स्नातक अनिल जैन के नानाजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

2. कांदला-प्रबुद्धनगर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती मामोवतीजी धर्मपत्नी स्व. लाला भगवानदासजी जैन का दिनांक 2 मई 2012 को 88 वर्ष की आयु में सल्लेखनापूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

3. घुवारा (म.प्र.) निवासी श्रीमती केसरबाई धर्मपत्नी मा. चन्द्रभानजी जैन का दिनांक 30 अप्रैल को शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा की सासूजी थीं। श्री चन्द्रभानजी तीर्थधाम सिद्धायतन समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

4. हेरले (महा.) निवासी श्री नेमिनाथ बंडू अलमान का दिनांक 14 अप्रैल को 83 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप बहुत स्वाध्यायी एवं अध्ययनशील थे। आपने अपने बच्चे के साथ परिवार के छः बच्चों को टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन हेतु भेजा था। आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जिनचन्द्रजी शास्त्री के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ खानियांजी स्थित श्री वासुपूज्य दि. जैन मंदिर में विद्याधर निवासी श्री एस. के. जैन द्वारा अपने सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में दिनांक 29 अप्रैल को पंचपरमेष्ठी विधान कराया।

विधि-विधान का कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर द्वारा संपन्न कराया गया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

हार्दिक बधाई !

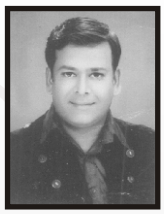

1. अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राज.प्रदेश के अध्यक्ष एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री को अजमेर रेलवे मण्डल द्वारा उदयपुर रेलवे सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया है। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल पर शोधकार्य भी कर रहे हैं। आप भाजपा युवा मोर्चा के शहर जिलाध्यक्ष भी हैं।

2. दिनांक 29 फरवरी से 7 मार्च 2012 में लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी पंजाब में आयोजित ऑल इण्डिया इन्टरनेशनल बॉक्सिंग चैम्पियनशिप में टोडरमल महाविद्यालय के छात्र अजित कवटेकर निडोणी (कर्नाटक) ने वेट केटेगरी 60 में भाग लिया एवं विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ हनुमान गंज मंदिर में दिनांक 13 मई को श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला हनुमानगंज का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पाठशाला संचालक सरोजलता जैन और पूनम जैन ने बताया कि यह पाठशाला पिछले 12 वर्षों से अनवरत रूप से चल रही है इसके माध्यम से लगभग 900 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये हैं। वर्तमान में भी इसमें लगभग 175 बच्चे जैनधर्म का अध्ययन कर रहे हैं।

अध्यापिका पूनम जैन ने बालबोध भाग 1, 2, 3 में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया। साथ ही कंठपाठ, शत-प्रतिशत उपस्थिति एवं नृत्य नाटिका प्रस्तुत करने वाले छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण आकांक्षा जैन और दीक्षा जैन ने तथा संचालन अनन्तवीर शास्त्री ने किया।

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127